मिट्टी के घर से निकली रोशनी

जागृति गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय

उत्तर प्रदेश के धूलखेड़ा गाँव में एक किसान रहता था, रामदीन। रामदीन के अलावा उसकी पत्नी वैजयंती, दो पुत्र और दो पुत्रियों के साथ गुजर बसर करते थे। उनके पास छह बीघा ज़मीन थी, जिसमें हर साल वे सभी मिलकर आलू की खेती बड़े मन से करते थे। रामदीन की मेहनत का गाँव में मिसाल दी जाती थी, लेकिन उसका ज़िद्दी और अक्खड़ स्वभाव भी कम मशहूर नहीं था। गाँव वाले अक्सर कहते, 'रामदीन मेहनती तो है, पर अपनी ज़िद में सबका भला भी डुबो देगा।' उसकी समझदार पत्नी का भी उस पर कोई ज़ोर नहीं चलता था। इसका घर मिट्टी का था, जिसकी खपरैल वाली छत बरसात में टपकती थी। बच्चे कोनों में बर्तन लगाकर पानी रोकते, और परिवार जैसे-तैसे गुज़ारा करता।

उस साल आलू की बंपर पैदावार हुई। गाँव के सभी किसान खुश थे, लेकिन बाज़ार में दाम औंधे मुँह गिर गए। गाँव वालों ने जो मिला, उसी दाम पर आलू बेचकर अपने-अपने घर सँभाले। पर रामदीन ने अपनी ज़िद पकड़ ली। 'मैं सस्ते में अपना सोना नहीं बेचूँगा। ऊँचे दाम का इंतज़ार करूँगा,' उसने अपनी मूछों पर ताव देते हुए कहा। उसने सारा आलू कोल्ड स्टोरेज में रखवा दिया, लेकिन ऊँचे दाम कभी आए ही नहीं। बल्कि आलू का भाव इतना गिर गया कि कोल्ड स्टोरेज का किराया चुकाना भी मुश्किल हो गया।

पत्नी ने आँसू बहाते हुए कहा, 'देखो जी, अगर हमारी बात मान लेते तो आज ये दिन नहीं देखना पड़ता।' रामदीन ने अपनी ज़िद से भरी हँसी के साथ जवाब दिया, 'नुकसान हुआ तो क्या? अगली बार अच्छा होगा।' उसकी ये बेपरवाही परिवार के लिए भारी पड़ रही थी। घर की हालत दिन-ब-दिन खराब होती गई। खाने के लिए भी सोचना पड़ता था। गाँव और रिश्तेदार ताने मारते, 'क्या होगा इनकी बेटियों का? अब तो पढ़ाई बंद करा दो और जल्दी से ब्याह दो, वरना बाद में कौन हाथ पकड़ेगा?'

मगर माँ चुपचाप सब सुनती और अपने बच्चों को हिम्मत देती। उन्होंने हर मुश्किल में परिवार को संभाला। 'तुम सब मेहनत करो। एक दिन यही मेहनत हमें इस ग़रीबी से बाहर निकालेगी। तुम्हारे पिता अभी अपनी ज़िद में हैं, लेकिन तुम्हें अपनी समझदारी से आगे बढ़ना होगा।' उनकी बड़ी बेटी, कविता, घर का सारा काम सँभालती—खाना बनाना, छोटे भाई की देखभाल और अपनी माँ का हाथ बँटाना। उसकी आँखें हमेशा नम रहती थीं, पर वो अपनी भावनाओं को छिपाकर परिवार को जोड़े रखती थी। छोटी बेटी, अंजलि, पढ़ाई में इतनी होशियार थी कि गाँव भर में उसकी चर्चा रहती। रामदीन का बड़ा बेटा, राहुल, भी पढ़ाई में अच्छा था। वह शहर में नौकरी तलाश रहा था। घर का खर्च़ बढ़ता ही गया, पर माँ ने हार नहीं मानी। उन्होंने घर के खर्चों में कटौती कर बच्चों की पढ़ाई जारी रखी। उनकी आँखों में एक ही सपना था—अपने बच्चों के भविष्य में एक रोशनी देखना।

समय अपनी रफ़्तार से बीतता गया। सभी लोग कड़ी मेहनत करते गए। एक दिन गाँव में ख़बर फैली, 'रामदीन जी की छोटी बेटी अंजलि कि बड़ी नौकरी लग गई!' यह सुनते ही गाँव वालों के चेहरों पर हैरानी और खुशी का मिला-जुला भाव था। लोग कहते, 'जिस मिट्टी के घर में बरसात में पानी टपकता था, आज उसी घर ने उपलब्धि का बहुत बड़ा स्वाद चखा है!'

रिश्तेदार, जो कभी ताने मारते थे, वही अब कहते, 'देखो, यही है असली कमाई। बेटियाँ बोझ नहीं होती, घर का नाम रोशन करती हैं।' रामदीन की आँखों में पहली बार अपनी ज़िद की जगह, अपनी बेटियों के लिए गर्व दिखाई दिया। उनकी बेटी की सफलता ने पूरे परिवार को एक नई उम्मीद दी। उनके बेटे राहुल का अभी नौकरी नहीं लगा था, लेकिन वह भी अपनी बहन से प्रेरणा लेकर दोगुनी मेहनत से अपनी तैयारी में जुटा रहा।

एक शाम, जब पूरा परिवार एक साथ बैठा था, माँ ने अपने बच्चों को देखा और माँ की आँखों से खुशी के आँसू बह निकले। ये आँसू पिछले सारे दुखों को धो रहे थे। रामदीन ने अपनी पत्नी का हाथ थामा और पहली बार झुके हुए स्वर में कहा, 'आज जो भी है, तुम्हारी और बच्चों की वजह से है। मेरी ज़िद ने तो सब कुछ खत्म कर दिया था।' गाँव वाले अब उनके घर को इज्जत से देखते थे और कहते, 'यह वही घर है जहाँ आलू को कोल्ड स्टोरेज में सड़ाया गया था, लेकिन देखो, अब पढ़ाई की वजह से एक नया जीवन मिल गया।'

यह कहानी हमें सिखाती है किः

ज़िद और ग़लत फ़ैसले परिवार को तोड़ सकते हैं, लेकिन समझदारी और मेहनत उन्हें फिर से जोड़ सकती है।

बेटियाँ बोझ नहीं, बल्कि परिवार की असली ताक़त हैं, जो मुश्किल वक़्त में सहारा बनती हैं।

शिक्षा ही वह रोशनी है जो ग़रीबी के घने अँधेरे को भी दूर कर सकती है। इस कहानी में मिट्टी का घर भले ही बारिश में टपकता रहा, लेकिन अंजलि की मेहनत से निकली रोशनी ने पूरे परिवार के भविष्य को जगमगा दिया। ***